"मधुर पंख" मार्मिक कविताओं का संग्रह है। रचनाओं में मनोभावों की मधुर अभिव्यक्ति है जो हृदय को छू जाने वाली है।

"महादेवी"

संग्रह की कविताओं की विशेषता ये है कि वे प्रेम और पीड़ा की सरलतम अभिव्यंजना करती है। रचनाएं मर्मस्पर्शी है। शृंगारिक तथा प्रेम पक्ष के मधुर प्रकरण में लेखनी विशेष मुखरित है। रचनाकार को सफलताओं के लिये आशीर्वाद

लखनऊ

की
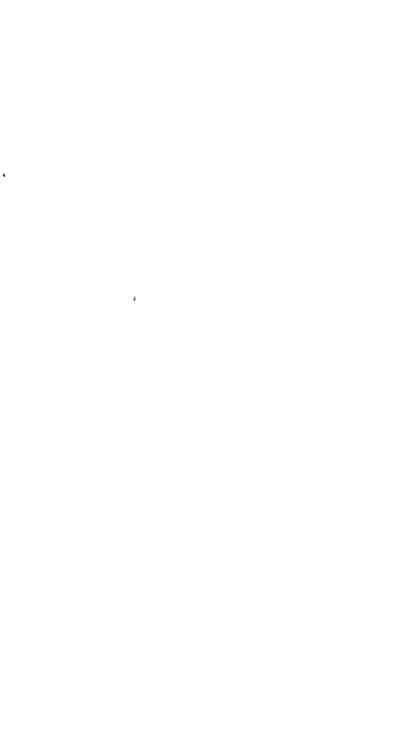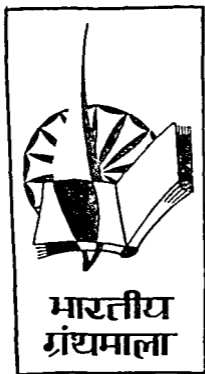
नवीनतम भेंट

मयूर पंख

मयूर पंख

(प्रतिनिधि कविताओं का संकलन

'प्रवीन'

लखनऊ
भारतीय ग्रन्थमाला

● प्रकाशक
विनोद शर्मा
संचालक भारतीय ग्रन्थमाला
गूंगे नवाब पार्क, अमीनाबाद
लखनऊ

● मूल्य
पांच रुपये पचास पैसे।

● प्रथम संस्करण
मार्च १९७१

● मुद्रक
साथी प्रेस
लखनऊ

मेरे बांसुरी वाले को
एक मयूर पंख
मेरी ओर से

● प्रकाशक

विनोद शर्मा
संचालक भारतीय ग्रन्थमाला
गूंगे नवाब पार्क, अमीनाबाद
लखनऊ

● मूल्य

पांच रुपये पचास पस

● प्रथम संस्करण

मार्च १९७१

● मुद्रक

साथी प्रेस
लखनऊ

मेरे बांसुरी वाले को
एक मयूर पंख
मेरी ओर से

● प्रकाशक
विनोद शर्मा
संचालक भारतीय ग्रन्थमाला
गूंगे नवाब पार्क, अमीनाबाद
लखनऊ

● मूल्य
पांच रुपये पचास पैसे।

● प्रथम संस्करण
मार्च १९७१

● मुद्रक
साथी प्रेस
लखनऊ

परिचय

किरनों का जाल लेकर, एक ऐसी भोर आई
परिचित, थे अपरिचित मे, जब तुम मिले थे हमको
दिन किन्तु पखेरू सा, बस उड़ चला निमिष मे
संध्या के धुंधलकों में, फिर खो चुका हू तुमको

वह स्वप्न यदि नहीं था, तो सत्य था अधूरा
कितनी अतृप्तियां है, अन्तर की वेदना मे
तुम क्यों मयूरपंखी, परिधान मे सँवर कर
आ आ के झिलमिलाती हो मेरी कल्पना मे

मदिरा के घूट पीकर मादक वसन्त ऋतु मे
जैसे बयार आये अमराइयों के भीतर
तुम भी कुछ ऐसी गति से जीवन परिधि मे आये
और छुप गये हो मन की गहराइयों के भीतर

पहरे सी दे रही है प्राणों पे तेरी स्मृति
अधरों से बासुरी की संगति न छूट जाये
अंकित हुई है जिस पर अनमोल छवि तुम्हारी
वह मेरी भावना का दरपन न टूट जाये

परिचय

किरनों का जाल लेकर, एक ऐसी भोर आई
परिचित, थे अपरिचित से, जब तुम मिले थे हमको
दिन किन्तु पखेरू सा, बस उड़ चला निमिष में
संध्या के धुंधलकों में, फिर खो चुका हू तुमको

वह स्वप्न यदि नहीं था, तो सत्य था अधूरा
कितनी अतृप्तियां है, अन्तर की वेदना मे
तुम क्यों मयूरपंखी, परिधान में सँवर कर
आ आ के झिलमिलाती हो मेरी कल्पना मे

मदिरा के घूट पीकर मादक वसन्त ऋतु मे
जैसे बयार आये अमराइयो के भीतर
तुम भी कुछ ऐसी गति से जीवन परिधि मे आये
और छुप गये हो मन की गहराइयो के भीतर।

पहरे सी दे रही है प्राणों पे तेरी स्मृति
अधरों से बांसुरी की संगति न छूट जाये
अंकित हुई है जिस पर अनमोल छवि तुम्हारी
वह मेरी भावना का दरपन न टूट जाये

शब्दों की शृंखला में तुम छन्द बनके विहँसे
मुस्कान से तुम्हारी मुखरित है गीत मेरा
वह दीप्ति थी तुम्हारे नयनों की चांदनी में
अब तक नया नया है मधुरिम अतीत मेरा

•

छलना

एक छलावा दे के, तुमने
छीन मेरा जग लिया है
क्या दिया, अतिरिक्त दुख के
सच कहुं तो ठग लिया है

क्यूं न हो, पागल पवन
अलकें तेरी, स्पर्श करके
मैंने भी तो, खो दिया सब
एक, तेरा दर्श करके

तुमने निज छवि से किये,
कितने ही मन आंगन अलंकृत
रूप की नव तर्जनी से,
तार मन बीना के झंकृत

निमन्त्रण

तुम कहां चले, रंग भरे
मदिर दृग लेकर
किसका मन करने हरण
रुको तो क्षण भर

लख नवल अधर दल,
सदा मधुप मंडराते
कब तक अनभिज्ञ
रहोगे नयन बचाते

ये तेरी निष्ठुरता
सर्वथा कृत्रिम सी
जो फिर जल हो
जायेगी, ऐसे हिम सी

इतना असीम अनुराग
कहां पायेगी
जल बिना, रूप लतिका
मुरझा जायेगी

•

ग्रहण

नींद तो आंखों से जैसे उड़ गई
चैन अब मन को नहीं है एक क्षण
प्यार उनको भी किसी से हो गया
लग गया इस चन्द्रमा को भी ग्रहण •

तुझको दुर्व्यवहार पर अभिमान था
नैन निर्मोही रहे मन मे विराग
जिसमें छाया था सदा से अन्धकार
आज भड़की है उसी अन्तर में आग

कामना के स्नेह के सुरभित सुमन
तूने ठुकराये बहुत हैं, मर्महीन
आज उस पीड़ा से कुछ परिचय हुआ
जब कोई, मन ले गया तेरा भी छीन •

•

प्रतीक्षा

एक अनुपस्थित ही तेरी, है असह्य
उस पर घेरे है झडी सावन की
बुझ गईं तन की उमंगे लेकिन
हो गई आग बहुगुणित मन की।

क्या प्रतीक्षा इसी को कहते है
ये घड़ी मधुर भी कठिन भी है
पड गया रंग वसन्त का पीला
मुख निशाकान्त का मलिन भी है

मैं इन दुखों से नही घबराता
ये मेरे दुख तो है कहने के लिये
मुझको ये ज्ञात है तुम आओगे
एक दिन दुख मेरे सहने के लिये।

•

अतीत

बहुत दिनों से तुम्हें देख मेरी आंखों में
उमड आये है, पहले असाढ के बादल
अभी देखा भी न था मैंने तुम्हें जी भरके
कि भर गया तुम्हारे और मेरे बीच में जल.

वो उमंगें मेरी नीलाम हो गईं अब तो
मेरे अधरों को मुस्कराये हुये युग बीते
कौन जाने कि कब हुआ हूं, कैसे मर्माहत
एक अवधि हो गई है मुझको इस तरह जीते,

हर एक पूर्णिमा आई तो तेरी याद आई
अंधेरे और घने हो गये अमावस में
वसन्त रितु की बहारों ने दुखाया मन को
और रोके से अश्रु रुक न सके पावस में.

अब तो ये आर्त विनय सर्वशक्तिमान से हैं
तुम्हें न मेरी कभी भूल कर भी याद आये
मेरी पीड़ा की व्यथा और मेरे मोह की सुधि
मेरे जीवन में न आये न मेरे बाद आये.

•

वरदान

जब भी तुम पूर्ण शरद चन्द्र से समक्ष आये
सबने वरदान सी किरणों को तेरी बांट लिया
कितने मन के प्रसून कर दिये गये अर्पित
कितनी करुणा भरी आंखों ने तुझे अर्घ्य दिया

क्षणिक नही है, निरन्तर ये सुख मिला, जब जब
मैंने मन मे किया, स्मृति को तेरी आलिगन
स्नेह के तो सदा होते है, सनातन नाते
शपथ तुम्हें है कि तोड़ोगे नही ये बन्धन •

मन नही छू सकी छलनामयी मदिरबाला
कोई कब तक भुलाये दुःख, इन्दु रस पीकर
मुझ से पूछो मेरी आंखों ने घूंट रखा है
तेरे नयनों से छलकता हुआ सुधा सीकर

•

वियोग

मुझको नही कामना कोई
मेरे लिये तुच्छ सुख भोग
मैंने प्यार किया है तुझको
मैंने पाया मधुर वियोग •

तेरी स्मृति को लौ जलती
जीवन के अवसाद तिमिर मे
जैसे चांद खिला हो नभ मे
जैसे दीप जले मन्दिर मे

ऐसा तिल तिल कर जलने में
मिलता क्या आनन्द, न पूछो
कैसे हो जाता है, दर्शन
जब दृग होते बन्द, न पूछो

उसका तो सब जग अपना है
कभी किसी का जो हो जाये
मन में तो आबद्ध रहेगा
जिसको खोना है, खो जाये

सहकर जीवन बिता दिया है
सहते सहते कट जायेगी
कभी तो मृत्यु स्पर्श करेगी
कभी तो पीड़ा मिट जायेगी

एक बार जो तुम आ जाते
तो जी भर कर दुख रो लेते
हम अन्तिम क्षण में तो सुख से
मृत्यु के आंचल में सो लेते

•

परिवर्तन

तुम विदा हो गये जाते जाते
हँस के बोले थे कि हम आयेगे कल
एक मुस्कान दूर से देकर
मेरी आंखों से हो गये ओझल

तुम कही खो गये हो या तुमको
बना लिया है किसी ने बन्दी
मुझको सन्देह था पहले से ही
एक मैं था, बहुत थे प्रतिद्वन्दी

तुम मेरे होके फिर मेरे न हुये
तो किस तरह से भला होंगे सहन
तेरे अलगाव के ये अनगिन दुख
ये उपेक्षाएँ ये परायापन

भर गये है जब आख मे आसू
ऐसा लगता है भरे जल मे हू
और जब मन उदास होता है
जान पड़ता है मरुस्थल मे हूं

प्रेम की क्या तुम्हारे परिभाषा
तुम ही समझो मुझे तो बोध नही
फिर भी जाओ मैं मुक्त करता हूं
मैं राह मे तेरी अवरोध नही

ऐसा तिल तिल कर जलने में
मिलता क्या आनन्द, न पूछो
कैसे हो जाता है, दर्शन
जब दृग होते बन्द, न पूछो

उसका तो सब जग अपना है
कभी किसी का जो हो जाये
मन में तो आबद्ध रहेगा
जिसको खोना है, खो जाये

सहकर जीवन बिता दिया है
सहते सहते कट जायेगी
कभी तो मृत्यु स्पर्श करेगी
कभी तो पीड़ा मिट जायेगी

एक बार जो तुम आ जाते
तो जी भर कर दुख रो लेते
हम अन्तिम क्षण में तो सुख से
मृत्यु के आंचल में सो लेते

•

परिवर्तन

तुम विदा हो गये जाते जाते
हँस के बोले थे कि हम आयेंगे कल
एक मुस्कान दूर से देकर
मेरी आखों से हो गये ओझल

तुम कहीं खो गये हो या तुमको
बना लिया है किसी ने बन्दी
मुझको सन्देह था पहले से ही
एक मैं था, बहुत थे प्रतिद्वन्दी

तुम मेरे होके फिर मेरे न हुये
तो किस तरह से भला होंगे सहन
तेरे अलगाव के ये अनगिन दुख
ये उपेक्षाएँ ये परायापन

भर गये हैं जब आख मे आसू
ऐसा लगता है भरे जल मे हू
और जब मन उदास होता है
जान पड़ता है मरुस्थल मे हूं

प्रेम की क्या तुम्हारे परिभाषा
तुम ही समझो मुझे तो बोध नही
फिर भी जाओ मैं मुक्त करता हू
मैं राह मे तेरी अवरोध नहीं

तुम मेरा पक्ष न सहने पाये
मैं आजभी तेरे विपरीत नहीं
फिर भी अच्छा है याद रखोगे
शत्रुता तो है, अगर प्रीत नहीं

•

अमर वेल

तुमने चाहा था उमंगों को दवा लो मन में
और भी फैल गई, कमल मुख पे अरुनाई
लाख डालोगे यवनिका तुम अपने यौवन पर
आग दवती नहीं, छुपती नहीं है तरुनाई

ये मधुर प्रेम का लगाव, ये आखों का मिलन
तेरे अनुसार ये कुछ भी न हुआ, खेल हुआ
मैंने तो पहले पहल मन का किया है सौदा
मुझे तो आयु भर का रोग, अमरबेल हुआ •

विहँस के सतरँगे आंचल की ओट में होकर
तुम सजाते रहे अलकों में नये तारों को
निरख रहे थे मेरे नैन दुरंगी छवि को
समेटता रहा मन दीप्ति के अंगारों को

किसी को हाथ लगाने की भी न दी अनुमति
ये मोह पुष्प मैंने अपने रक्त से सींचे
उसी पे 'भूल है तेरी' ये लिखा पाया है
जिसके एक एक शब्द, तूने नखों से खींचे •

•

अभिलाषा

मैंने लख ली व्यथा छुपी जो
इन मुस्कानों के नीचे
तीखे नैन प्रकट हो जाते
झीने घूघट के पीछे

यदि प्यासी है अभिलाषायें
प्यासी ही रह जाने दो
मोल आसुओं का है ही क्या
बहते है बह जाने दो •

वे दिन भी थे निज महत्व के
जिनमें पनपा तेरा प्यार
जैसे हों रविवार पौष के
जैसे श्रावण के सोमवार

फिर वसन्तिका सजा गई
फूलों से डाली डाली को
किन्तु अभागे देख न पाये
जैसे चांद दिवाली को

•

प्रणयी

संसार के पीछे का संसार भी दिखता है
जब देखता कभी हूं, मैं निर्निमेष तुमको
मैं दे चुका हूं अपना सर्वस्व किन्तु फिर भी
दुख ले लिये हैं मैंने, जो कुछ है शेष तुमको।

आंखों में जब तुम्हारी गिरती हैं मेरी आखें
देखा जहां जहां तक पहुंची है दृष्टि अपनी
अपनी ही कामनाओं का लक्ष्य निहित देखा
उनकी मृदुल परिधि में पाई है सृष्टि अपनी

हारा पुकार कर मैं अन्तर तेरा न पिघला
मुझ पर ये दुख गिरे हैं, तेरा हृदय न टूटा
ओ निर्दयी! किसी का मन लूट जाने वाले
झूठा तेरा प्रणय था या मेरा प्यार झूठा

•

प्रवंचना

है प्रवंचना प्रीत तुम्हारी
मृग मरीचिका तेरा प्यार
ढूंढूं मैं इस तट पर लेकिन
तुम तो दूर खड़े उस पार

मुझे शत्रुता थी अपने मे
मैंने स्वयं दशा यह कर ली
तुम से कोई नही उलहना
स्वत हृदय मे पीडा भर ली।

सुलग रही फूलों की डाली
बुझा बुझा तारो का हास
रोती है बरसात सिसक कर
पुरवाई लेती नि:श्वास

आज चिता जलती है उर मे
नयनों मे जल भरा जलद है
आदि भले ही आकर्षक था
किन्तु प्रेम का अन्त दुखद है।

जो वर है अभिशाप सरीखा
कहते जिसे स्नेह संयोग
सहज है तन की सभी व्याधियां
कभी न हो यह मन का रोग।

फिर वसन्तिका स
फूलों से डाली ड
किन्तु अभागे देख
जैसे चांद दिव

•

प्रणयी

क्या उपचार करेगा कोई
जब बैठा हूँ मैं विष पीकर
तुम से ही नैराश्य मिला तो
फिर मुझको क्या करना जीकर।

•

हलाहल

मत ठेस दो हृदय पर ये मन न टूट जाये
मुरझा के फूल खिलना, कोई सरल नहीं है
जैसे कि दीप बुझने पर ज्योति नहीं रहती
जैसे बिछड़ के मिलना, कोई सरल नहीं है।

जाने कब आओगे तुम, पीड़ा का मूल्य लेकर
जाने कब उस अनोखे सुख से, मिलाप होगा
यदि मेरे नाम को भी बिसरा दिया है तुमने
ये भी अतीत जन्मों का कोई पाप होगा।

ठुकरा दिया था मुझको तो मेरी भावना ने
सम्मान यदि न करते, परिहास तो न करते
गंगा के जल से निर्मल इस स्नेह के सलिल को
लांछित न लोग करते, उपहास तो न करते।

तेरे मौन मूक निर्णय से
कितनी बार मैं तुमसे हारा
जब तुम मर्म न दोगे अपना
क्या समझूं अभिप्राय तुम्हारा.

मत स्पर्श करो घावों को
अन्तर का पन्छी आहत है
किसने कहा कि याद करो तुम
मुझे भुला दो, यही बहुत है.

•

उन्माद

काली पलकों की थिरकन के
नीचे डब डब करते वे दृग
थर थर करती काया तेरी
मानो कोई घबराया मृग

मैं कैसे दृष्टि स्पर्श करूँ
मन की मदिरा छलके न कहीं
डर है श्वासों से लज्जा का
बोझिल आंचल ढलके न कहीं

प्रेम को एक खिलवाड़ समझकर
तुमने तो वस की अठखेली
फिर तुम हंसकर फेर गये मुख
सारी विपदा हमने झेली.

मेरा एकाकीपन, शुभ है
तुम्हें तुम्हारा राज समाज
फिर भी अहोभाग्य ही है जो
तुम सम्मुख बैठे हो आज

प्रथम भेंट ने मैंने जिस पर
किया पूर्ण विश्वास, तुम्ही हो
मन पपिहे के स्वाति वून्द हो
इन नयनों की प्यास तुम्हीं हो,

पास बुलाकर प्रेम जताकर
कही खो गये जाकर दूर
कब तुम इतने निर्मोही थे
कव थे बोलो इतने क्रूर.

क्यों तुम बदल गये परदेसी
ये क्या तुम्हें हो गया बोलो
शब्दों की निर्मल धारा में
नीरवता का विष मत घोलो

तेरे मौन मूक निर्णय से
कितनी बार मैं तुमसे हारा
जब तुम मर्म न दोगे अपना
क्या समझूं अभिप्राय तुम्हारा.

मत स्पर्श करो घावों को
अन्तर का पन्छी आहत है
किसने कहा कि याद करो तुम
मुझे भुला दो, यही बहुत है.

•

उन्माद

काली पलकों की थिरकन के
नीचे डब डब करते वे दृग
थर थर करती काया तेरी
मानो कोई घबराया मृग

मैं कैसे दृष्टि स्पर्श करूं
मन की मदिरा छलके न कहीं
डर है श्वासों से लज्जा का
बोझिल आंचल ढलके न कहीं

प्रेम

प्रेम मे है ईश्वर का वास
प्रेम में निहित अलौकिक शाति
प्रेम का होगा जहां अभाव
वही होगी मन मे उद्भ्रान्ति

हृदय के विस्तृत अम्बर बीच
उदित होता जब प्रेम मयंक
सुधा सी बिखराता मुस्कान
और पी लेता दुख कलंक

न फिर रहती भावना अतृप्त
न फिर होती आशाये भग्न
जो इस मदिरा का कर ले पान
जन्म जन्मों तक रहता मग्न

उसे जड सा लगता संसार
और सारे वैभव निर्मूल्य
जिसे चेतन का होता बोध
जिसे वह निधि मिल जाये अमूल्य

चेष्टाये विवेक की सभी
रहीं अन्तर से शासित सदा
हुए अनुराग भरे स्वर से
ईर्ष्या द्वेष पराजित सदा

सभी के दुख जो अनुभव करे
स्नेह का सबको दे जो दान
उसी का जीवन है सम्पन्न
उसी को कहते सभी महान

•

पुरस्कार

कभी चकित रह गई थीं आंखें
अपने सम्मुख तुमको लख
फिर कम्पित हो अधर खुले थे
प्राणों को सूली पर रख

मन मे वन्दी बना लिया
मैंने फिर तुमको आंखें मूंद
छलक गई मदिरा की प्याली
ढलक गई करुणा दो बूंद

मूक मेरे नयनों की भाषा
तेरा प्यार सदा से मौन
रह गई करवट लेकर पीड़ा
व्यथा हृदय की समझे कौन।

अभी तो मन की मन में ही थी
हो न सकी फिर आधी बात
सिमट गईं किरनें चमकीली
फैल गई अंधियारी रात।

क्या जाने कब तक लौटो तुम
कब देखूं मैं मुख तेरा
फिर भी उतना ही सुख मुझको
जितना लेलो सुख मेरा

कभी मिले भी हो तुम मुझको
तो भी कुछ न हुआ सन्तोष
अन्तर में रह गई कामना
क्या जाने किसका है दोष

पर जाने क्या हुआ अचानक
तुमने फेरा मुख अपना
लौट आईं बहकी आशायें
टूट गया मोहक सपना

कैसे प्यार करूं मैं तुमको
उसने कदाचित् दिया सिखा
जिसने जन्म दिया है मुझको
जिसने मेरा भाग्य लिखा

•

वेदना

जीवन के किसी पथ पर ऐसे अमूल्य क्षण में
तुमसे भी भेंट होगी अनुमान भी किसे था
फिर तुम समा के मन में कुछ ही दिनों में बरबस
बदलोगे इस तरह से ये ध्यान भी किसे था.

किसको पता था पहले, अपने पे भी बीतेगी
सुनते थे नाम जिसका है प्रेम, ये भी होगा
जो दूर दूर से ही लगता है रोग, वो ही
मुझको भी न छोड़ेगा, एक दिन मुझे भी होगा.

वैसे ही मेरे मन में उभरी थीं कुछ उमंगे
देखा, कभी है तुमने कलियों को फूल होते
उतने ही समय में, पर अरमान ढह गये है
लगती है देर जितनी महलों को धूल होते.

जिस प्रेम को सहज ही समझा था, वही लेकिन
पर्वत से बढ़ के निकला, सोचा था तृण लगेगा
क्या ज्ञात था कि सहते हैं चन्द्र सूर्य जो दुख
ऐसे कभी अचानक मन को ग्रहण लगेगा.

एक ओर तुम हो मेरे एक ओर अन्त मेरा
तुमको न पा सके तो निश्चय यही है अपना
छुप जायेगे जलधि की उत्ताल तरंगों में
हम अग्नि की शिखा पर रख देगे हृदय अपना.

ममता तो दी है तुमने अनुरक्ति की परिभाषा
सहने पड़े हैं यद्यपि मुझको ये दुख भारी
फिर भी न मैं भूलूंगा उपकार ये तुम्हारा
इन देव का रहूंगा आजन्म मैं आभारी।

•

स्मृति

ा हां मुझे बता जा तू—अब मैं कैसे भूलूं तुझको
कुछ शायद वैसा ही है—लेकिन तुम नहीं मिली मुझको।

पनघट पर आने वाली जब
भरती है गागर पर गागर
उनमें भी तुमको ढूंढा है
कुछ दूर दूर से सकुचाकर…

कट गई भोर मन्दिर के पास
दिन बीत गया गलियारों में
अमराई में हो गई सांझ
रजनी उन नदी किनारों में

फिर आईं रितुएँ रंग भरी
पायल छनकी कंगन खनके
तेरे बचपन की कुछ सखियां
निकलीं घर से फिर बन ठन के

अब कौन रखे जलते दीपक
तुलसी चौरे पर आंगन में
जिसने जीवन में दीप्ति भरी
उसने आग भरी मन में

तेरी उन मुस्कानों के बिना
सूनी है यह सारी नगरी
उस तरह छुड़ाये कौन भला
कांटों में बिंधी हुई चुनरी

कानों में अब तक गूंज रहा
वह शोर चूड़ियों का तेरी
इसका उत्तर किससे मांगू
क्यों रूठ गई दुनिया मेरी

विश्वास

तुम कहते हो तुम आओगे
लेकिन मुझको विश्वास नही
तुम मुझको भूल न जाओगे
लेकिन मुझको विश्वास नही

जब मन पर बोझ नही होगा
वो दिन भी होगा—क्या जाने
जब खुशिया लेकर लौटेंगे
मेरे दिन जाने पहचाने
जब तुम मेरे कहलाओगे
लेकिन मुझको विश्वास नही

क्या ये भी सम्भव है तुमको
मै इस दुनिया से छीन सकू
तुमको पाकर यदि दो आसू
रोना चाहूं रो भी न सकू
तुम सौ सौ अश्रु बहाओगे
लेकिन मुझको विश्वास नही

क्या आयेंगे ऐसे प्रभात
जिनमे आशा के रंग होंगे
ऐसी भी क्या संध्या होगी
जब हम तुम दोनों संग होंगे
लेकिन मुझको विश्वास नहीं
मुझ पर जग को ठुकराओगे

आंखों के तारे चमकेंगे
जब चांद उदित होगा मन में
निर्झर सी रजतमयी किरनें
आ आ के गिरेंगी आंगन में
यह स्वर्ग कभी दिखलाओगे
लेकिन मुझको विश्वास नहीं

•

कामना

ये मद भरे नयन मुझे निहार लेने दो
इन आयुधों को हृदय में उतार लेने दो
तुम से आसक्ति का कण भर भी कठिन है पाना
किसी तरह से ये दो पल उधार लेने दो.

कहीं खो जाय न चन्दा का रुपहला दर्पन
निशा को सुरमई अलकें सँवार लेने दो
तुमने वन वन में यदि खिलाये हैं मुग्धा के सुमन
मेरे मधुवन को भी अपनी बहार लेने दो

एक क्षण के लिये तो मृत्यु से कहो—ठहरे
बस एक बार फिर उसको पुकार लेने दो
ये सही है कि वही जीत ले गया बाजी
मगर जो पास है मेरे वो हार लेने दो.

•

अंगारे

क्यूं दीप जलाते हो मन में
इस घर को अँधेरा रहने दो
दुनिया को दो सामीप्य भले
मुझको ही अकेला रहने दो।

अपनी आशाओं की लहरें
जिस तट को छूकर लौट गई
उस मौन व्यथा से जलते इन
अधरों को प्यासा रहने दो।

पीड़ा के पल एकाकी है
कब किसने, किसको योग दिया
जब तुम अपना स्वर दे न सके
तो गीत अधूरा रहने दो।

जाने किस पल मुझसे, मेरी
सांसों का नाता टूट चले
तुम प्यार भले ही दे न सको
ये प्यार का धोका रहने दो।

स्पर्श

तेरी आखों का झुक जाना
छू गया हृदय को धीरे से
दर्पण के सम्मुख शरमाना
छू गया हृदय को धीरे से

तेरे ललिताभ कमलदल से
सुकुमार करों की बात ही क्या
बालारुण से देदीप्यमान
रक्तिम अधरों की बात ही क्या

उस रक्त धनुष का खिंच जाना
छू गया हृदय को धीरे से
तेरी रत्नाकर आखों पर
उठती गिरती पलकें पल में

जैसे गंगा तट पर नटखट
दो मीन थिरकतीं हों जल में
अपने से ही यूं घबराना
छू गया हृदय को धीरे से

अंगारे

क्यूं दीप जलाते हो मन में
इस घर को अँधेरा रहने दो
दुनिया को दो सामीप्य भले
मुझको ही अकेला रहने दो·

अपनी आशाओं की लहरें
जिस तट को छूकर लौट गई
उस मौन व्यथा से जलते इन
अधरों को प्यासा रहने दो·

पीड़ा के पल एकाकी हैं
कब किसने, किसको योग दिया
जब तुम अपना स्वर दे न सके
तो गीत अधूरा रहने दो·

जाने किस पल मुझसे, मेरी
सांसों का नाता टूट चले
तुम प्यार भले ही दे न सको
ये प्यार का धोका रहने दो·

लकीरें

खिंच गई मेरे हृदय पटल पर
तेरे प्यार की अनमिट रेखा

फिर वह दबी पिपासा मन की
आज उभर आई है देखो
फिर वह मधुर कामना तेरी
आंख में भर आई है देखो
फिर न चुराओ नयन नयन से
फिर न लिखो यह निर्मम लेखा

अब तक झेल लिये दुख मैंने
अब तो मुझे सुखी होने दो
इन बोझिल आखों को अपनी
कुन्तल छाया में सोने दो
क्या संशय है उर अन्तर में
अब तुमको है भय काहे का

●

ढलते कुँआर की शरद्
ज्योत्स्नामयी रुपहली रातों को
तेरा नयनों से कह देना
उन सभी अनकही बातों को

कुछ कहते कहते सकुचाना
छू गया हृदय को धीरे से
बज उठी चूड़िया जब तेरी
हाथों से बांह छुड़ाने में

हर ओर देखना डर डर कर
फिर जग की लाज बचाने में
बाहों में सिमट कर आ जाना
छू गया हृदय को धीरे से

लकोरें

खिच गई मेरे हृदय पटल पर
तेरे प्यार की अनमिट रेखा

फिर वह दबी पिपासा मन की
आज उभर आई है देखो
फिर वह मधुर कामना तेरी
आंख मे भर आई है देखो
फिर न चुराओ नयन नयन से
फिर न लिखो यह निर्मम लेखा

अब तक झेल लिये दुख मैने
अब तो मुझे सुखी होने दो
इन बोझिल आखो को अपनी
कुन्तल छाया मे सोने दो
क्या संशय है उर अन्तर मे
अब तुमको है भय काहे का

•

परित्राण

दो उर में छुपा हुआ है जो
मन का रहस्य खुल जाने दो
अपने निश्वासों को मेरे
मृदु प्राणों में घुल जाने दो

आओ हम तुम मिल कर दो
अश्रु बहा लें एक दूसरे पर
इस मन की गंगा से जग के
सारे कलंक धुल जाने दो

जो विनयी हैं, उन अरमानों
को भी हठ का अवसर दे दो
चंचल भावों को भी अपने
निष्कर्षों पर तुल जाने दो

आशाओं के मोहक पन्छी
है कब से बन्दी बने हुये
आया कुसुमाकर उपवन में
ये पन्छी आकुल जाने दो

•

चिनगारी

कुछ जीवन मे आग लगा दी
कुछ भर दी उर मे चिनगारी
जीना दूभर आज हुआ है
यह भी तो है दया तुम्हारी.

अनुरागों के फूल अछूते
और उमंगे रहीं अनूठी
रह गये स्वप्न अधूरे मेरे
रह गई मन कामना कुँवारी

अनायास ही किया भरोसा
कुछ न लखी तेरी चतुराई
बिन जाने पहचाने तुझ पर
मन की उलट दी गागर सारी

आज निराश्रित होकर दर दर
भटक रही है सब आशाये
जैसे घबराई सौदामिनि
नभ में फिरती मारी मारी

ठहर न पाऊँगा पल भर भी
तेरे रूप दर्प के आगे
टूट गई मेरी आशायें
मन की अभिलाषायें हारी

तुमको पाकर मैंने भी तो
अपने पर अभिमान किया था
यह भी था अपराध हमारा
यह भी तो थी भूल हमारी।

•

दान

ये तो कह दो तुम कहां जाते हो मेरे प्रान लेकर
मैं अभागा अब किधर जाऊँ दुखों का दान लेकर
किस तरह बीतेगा ये जीवन भला होकर पराजित
मन मे पीड़ा, आसुओं में प्यार की पहचान लेकर।

रितु वसन्ती छोड़कर पतझर का मुख भी तुम न देखो
तुम सदा हँसते रहो फूलों की मृदु मुस्कान लेकर
दर्प का मद लेके मन्थर गति से राहों पर चलो तुम
चन्द्रमा की भांति मोहक रूप का अभिमान लेकर

आँच

तुमको भूल नही पाता हू
अथक प्रयास किये जीवन भर
कितना मन को समझाता हू
तुमको भूल नही पाता हू

तुम जो कह दो उसे लुटा दू
मैं इस ऋण का मूल्य चुका दू
किसी तरह तो चैन मिले अब
तिल तिल स्वय जला जाता हू
तुमको भूल नही पाता हू

चले मेरा मन उपवन लेकर
जाते जाते सौ दुख देकर
इस तेरी स्मृति के हाथों
मैं दिन रैन छला जाता हूं
तुमको भूल नही पाता हू

•

लोग

मिलकर मन तो ले लेते हैं
फिर दुख दे जाते हैं लोग
पल पल करो प्रतीक्षा उनकी
लेकिन कब आते है लोग।

कैसे उनकी सुधि बिसराऊँ
कैसे छोड़ूं उनका मोह
यद्यपि धैर्य की बातें कहकर
मुझको बहलाते है लोग

क्या वे आग बुझा लेंगे जो
लगी हुई है चारों ओर
फिर क्यू लौ को भड़काते है
फिर क्यू समझाते है लोग

इस पतझार के सूनेपन को
मेरा जीवन सौप गये
किन्तु सुना था कभी बहारों
की भी रितु लाते है लोग

यह परिणाम ज्ञात था फिर भी
हँसकर सह ली हम ने चोट
वैसे भी कुछ बाण है जिनको
ऐसे भी खाते है लोग

प्रेम व्यथा के सुख की जग मे
सबको तो अनुभूति नही
क्या है ? जो सब खो देने पर
उत्तर में पाते है लोग .

वो अनुराग भरे दिन तुमको
कभी नही क्या आते याद
हाय कदाचित् तुम जैसे ही
निष्ठुर कहलाते है लोग .

•

निर्मम

तुम कहां छिपे हो निर्मोही !
मैं ढूढ रहा हूं गली गली
मुरझाई जाती है तुम बिन मन
के उपवन की कली कली

जब तुम एकाकी छोड़ गये
अपना कहकर मुख मोड गये
हर दुख ने अपनाया मुझको
हर एक खुशी मुह फेर चली

तुम क्यों मेरी पीड़ा समझो
क्या क्या बीती तुम क्या समझो
चिन्ता के सूने मरघट पर
क्यू अरमानो की चिता जली

तुम से लगाव जो था मन को
जो थी आशायें, जीवन को
बरसों तक तुम अनभिज्ञ रहे
बरसों वह उर के बीच पलीं•

हम उस दुख को ही रोते हैं
तुम ने भी, निष्ठुर होते हैं
मन छीन लिया भोलेपन ने
चतुराई तुम कर गये, छली

एक पल न भुला पाया हूं तुझे
आती है तुम्हारी याद मुझे
जब सूरज उगे, चांद चमके
जब भोर हुई, जब शाम ढली

•

आवाहन

उसने हठ की है कभी सामने न आयेगा
लाख छुपता हो मगर छुप के कहां जायेगा
रात बिखरेगा जो काजल की तरह अम्बर में
वही उगते हुये सूरज में मुस्करायेगा
तारों तारों में वो हीरों का रूप भर देगा
चांद की झिलमिली किरणों में उतर आयेगा

वो सुरभि वन के प्रसूनों में समा जायेगा
जो घटा वनके उठा प्यास के मारों के लिये
वो लेके इन्द्रधनुष व्योम पे छा जायेगा

•

दूरी

सांझ सुहानी है मधु रितु की
फिर भी मेरा मन उदास है
मेरा तो सर्वस्व दूर है
तुम हो दूर, तेरे ही पास है •

पल पल कंपित मन लहराये
जैसे बीच भँवर मे पानी
नयनों में झिलमिल करती है
तेरी छवि जानी पहचानी
लाख भुलावा देता हूं, तू
दूर नही मेरे ही पास है
फिर भी मेरा मन उदास है

अन्तर में यूं जड़ी हुई है
वह तेरी प्रतिबिम्बित काया
जैसे जल पर पड़ी हुई है
तारों की रंगीन प्रतिछाया
हर धड़कन में तेरी आहट
सांसों को तेरी ही आस है
फिर भी मेरा मन उदास

•

मुस्कान

काटे बो गई, मेरे मन में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की
इक आग भर गई जीवन में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की

पौराणिक पृष्ठों सी पवित्र
अक्षय सौंदर्यमयी, विचित्र
झिलमिल करती है, दर्पण में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की

मणि मुक्ता से अमूल्य गहने
मृदु हास्य, रजत नूपुर पहने
मुखरित है मन के आंगन में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की

अपने ही पर इठलाती है
सकुचाती और लजाती है
अधखिली कली सी उपवन में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की

निर्मल जलधारा सी मोहक
थी चन्द्रकिरन सी आकर्पक
पर डाल गई है उलझन में
मुस्कान तुम्हारे अधरों की

किसलय पर पड़े, तुहिन कण सी
संकेत भरी उन्मीलन सी
जो छुप न सकी अवगुण्ठन में
मुस्कान तुम्हारें अधरों की

•

परिमल

ुबह उनींदी बीत गई है, और सांझ भी अलसाई है
ाने कब खोली थी पलकें, अब तक नींद नहीं आई है

चांद खिला था प्यारा प्यारा
झूम रहा था तारा तारा

ुझको किन्तु उदास देखकर, रात चांदनी मुस्काई है

रजनी मुखरित झील झील में
देख देख मुख नीर नील में

कैसी नववधू जैसी अपना, रूप बिम्ब लख शरमाई है

विरह तपन मे तन डूबा है
अब भी उनमे मन डूबा है

ाही है मेले स्मृतियों के, वही घटा घिर कर छाई है

•

इतिहास

क्या मैंने अपराध किये है
मत पूछो मेरा इतिहास
तुमको चाहा है मैंने बस
इतना ही कर लो विश्वास

युग युग के दुख भूल सकूं
यदि निरख सकूं तेरी मुस्कान
तुम अगाध घट हो अमृत के
इन अधरों पर अनबुझ प्यास

मेरे उर अम्वर पर तुमने
खीच दिया है इन्द्रधनुप
तुम अन्तर की ज्योति किरन हो
तुम मेरे मन के मधुमास

एक नहीं मैं सौ जीवन
जी लूगा तेरी प्रतीक्षा में
नाम तुम्हारा लेकर ही
टूटेगी मेरी अन्तिम सांस

•

मिलन

अब छलक जाने दो ये नयनों की गागर
रिक्त घट में नीर भरने आ गया हूं
वेदना दम तोड देगी एक पल में
मैं तुम्हारी पीर हरने आ गया हू

क्यूं रहे हम दूर तुम से मिल न पाये
क्यूं न जाने मन के शतदल खिल न पाये
मैं तुम्हारी कामना का फूल बन कर
तेरे आंचल मे बिखरने आ गया हू

अब मुझे मत दोष दो, निर्मम न कहना
स्वयं मेरे प्राण देते है उलहना
तुम मेरे अन्तर मे, क्यूं डूबे हुये हो
मैं तेरे मन मे उभरने आ गया हू

मन मे फिर तुम से मिलन की आश लेकर
अपने अधरो पर अधूरी प्यास लेकर
यूं तो जीवन भर भटकता ही रहा हू
अब तुम्हारे द्वार मरने आ गया हू।

•

शपथ

तुम अपनी सांत्वनायें रहने दो
ये मेरे दुख है मुझे सहने दो

मन के बादल जो उमड़ आये हैं
और आंखों में घिर के छाये है
ये अश्रु है तो इन्हें बहने दो
ये मेरे दुख है मुझे सहने दो

मैंने यह बीज स्वयं बोया है
फिर इस निन्दा से झिझकना क्या है
कोई कहता है अगर कहने दो
ये मेरे दुख है मुझे सहने दो

हाय वही सांझ जब तुम आये थे
मैंने जो स्वप्न में बनाये थे
अब वे बालू के भवन ढहने दो
ये मेरे दुख है मुझे सहने दो

●

बेपीर

रूठ गये जब तुम ही मुझ से
कौन बंधाये मन को धीर
मैंने कितने दुख झेले है
तू क्या जाने, ओ बेपीर

मिलन के क्षण इतने सीमित है
जैसे शैशव, बालारुण का
विरह की रातें बढ़ती जाती
जैसे द्रुपद सुता का चीर

इस अनुराग किरन से मेरा
जीवन ज्योतिर्मान हुआ
मेरे मानस की मणि, तेरे
आगे फीके मरकत हीर

ऐसी पवन चली उपवन मे
खिलते ही मुरझाये फूल
पल पल बढ़ती गई वेदना
उठती गई हृदय की पीर

तेरी स्नेहासक्ति ने जग के
सीमा बन्धन तोड़ दिये
मोह की पावन पीड़ा ऐसी
मानो हो गंगा का नीर

घायल करके छोड़ चले
कैसे अनजान अहेरी हो
एक वाण पर्याप्त नहीं,
रीता कर दो मुझ पर तूनीर

पूर्ण इन्दु की अर्द्ध निशा में
तेरी स्मृति, फिर आई
जैसे मुरली की मोहक धुन
गूंज उठे फिर जमुना तीर

कोई जल ढरका जाता है
कोई रंग उड़ा जाता है
जब नयनों में दीपक जलते
जब हाथों से उड़े अबीर

•

अन्याय

यही है क्या बस प्यार तुम्हारा

तुमने ऐसी रीत बना दी
जब चाहा तब ठेस लगा दी
लेकिन यह तो न्याय नहीं है
ये कैसा व्यवहार तुम्हारा…

चारों ओर निहारा तुमको
कितनी बार पुकारा तुमको
जाने क्या प्रारब्ध है अपना
बन्द है अब तक द्वार तुम्हारा…

मुस्कानें जब छीन ही ली है
प्यार की कलियां बीन ही ली है
जीने भी दो या कि न दो तुम
ये भी है अधिकार तुम्हारा…

उस वैभव नगरी पर तेरी
पड़े न परछाईं भी मेरी
यूं ही बसा रहे चिर युग तक
नवनिर्मित संसार तुम्हारा…

●

रूप

रूपसि !

मत कर मुझको वाध्य
कि पी लूं रूप सुधा की धार...

ओ आंचल ढलकाने वाली
दृग से मधु छलकाने वाली
हो जाता है ऐसे में
ही, कोई गले का हार...

ये सज्जा ये रंग हैं झूठे
कहां हैं एसे रत्न अनूठे
प्यार ही केवल
रूपराशि का है अनुपम सिंगार...

•

निशा

जब गूंध रहा था चांद चतुर
प्रियतमा चादनी की अलके
जब चूम रही थी विधु रजनी
तारों तारों की नम पलके
मैने फिर तुझे पुकारा था
जाने तुम खोये रहे कहां

प्रणयी अपनी कामिनियो के
मुख देख रहे थे दर्पण मे
मैने तुमको कितना ढूढा
इस मौन धरा के कण कण मे
दुर्लभ थे तुम तो यहा मुझे
दुष्कर था जाना मुझे वहा

ऐसे कठोर वन्धन तेरे
जो तुम्हे लौट आने भी न दे
ऐसी निर्मम स्मृति तेरी
जो मन को वहलाने भी न दे

मत भूलो, नही देवता हू
केवल मैं इस जग का इन्सा

•

शलभ

कब बहलाने से तेरा, विरह बहलता हैं
झरते हैं अश्रु और, मन और मचलता है
मद भरी उमंगें मुरझाई, तुमको खोकर
अपना दिनेश छिन जाने पर, दिन ढलता है

मुस्कानों के नीचे हैं, छुपी वेदनाये
कांटों पर जैसे, फूल, कहीं पर खिलता है
तुम आओ या कि न आओ ये ईश्वर जाने
सांसों का पन्छी आशाओं पर पलता है

जैसे सुख मिलता था तेरी मृदु बातों में
तेरी स्मृति में भी अपनापन मिलता है
जलती है, होली और दिवाली एक रात
ये विरही मन तो नित नित यूं ही जलता है।

•

पहेली

भेद गई हृदय हिरन की मो अँखिया
उड़ती है मन के गगन पर ये पखिया

गिरते हों जैसे उजालों के झरने
लगती हो जैसे चँदनिया बिखरने
जब जब वो मुड़के निहारे कनखियां...

क्षण मे चुनौती है क्षण मे समर्पण
समझेगा क्या कोई तेरा निमंत्रण
तुझको न पढ़ पाई जब तेरी सखिया...

•

गागर

भरे कैसे गगरी—नदिया गहरी
चुभ गया उसके काटा पग मे
भर गई दामिनिया रग रग मे
अमवा की छाया जो पल भर ठहरी

बिंदिया गिर गई, कँगना टूटा
गजरा खुल गया, कजरा छूटा
सर से सरकी, चुनरी सुनहरी

रुक गये पग और झुक गये नैना
सुन सुन मुरली के मृदु बैना
लूट गया मन--निर्दयी अहरी

•

मधुमास

आया उपवन मे मधुमास
बहती पुरवाई मतवाली
छीन कही ली कहीं चुरा ली
फूलों से मदभरी सुवास···

इस वसन्त मे कहा छुपी हो
ढूढ रहा है नवल कली को
मधुप लिये अधरों पर प्यास···

कलियों के नयनों में छलकीं
मोती जैसी बूदें जल की
आज हो गई पूरी आस...

चपल तितलिया करतीं मान
पहने इन्द्रधनुष परिधान
चूम रही, पुष्पों का हास ..

कभी प्रसून कभी किसलय पर
गाते गीत विहग उड़ उड़ कर
दूर कभी, हो जाते, पास...

जैसे आज प्रकृति का कण कण
देता सबको मौन निमन्त्रण
क्यों न तुम्हे होता आभास

यह रितु लौट न जाये, आकर
मैं भी तुम्हें निरख लू पाकर
लेकिन, कैसे हो विश्वास...

•

मझधार

मैं लहरों से खेल रहा हूं
मुझ से खेल रहा मँझधार
ऐसे में मुझको रह रह कर
कौन बुलाता है उस पार

मुरली से फिर राग उठे हैं
सोये सपने जाग उठे हैं
मेरी उजड़ी आशाओं ने
फिर गूंधे फूलों के हार

उपवन मे आया फिर माली
तरुवर पर छाई हरियाली
सुनता हूँ वसन्त आया है
फूल उठे, टेसू कचनार

मादकता छाई, घर घर में
खुशियां आई, नगर नगर में
लेकिन मेरा मन सूना है
सूना है मेरा संसार

यदि तेरा होकर रह लेता
तेरे दुख भी मैं सह लेता
किन्तु अगर अनुराग हमारा
तुमको भी होता स्वीकार

कुछ कहने को तरस गई है
जब तब आखें बरस गई है
लूट लिया, सर्वस्व मेरा, पर
मिला न मुझे एक अधिकार

पाना हो न सका निर्बाध
खो देना भी है अपराध
मुझको तो अभिशाप हो गये
मेरे अपने, मेरा प्यार

कोई भी निर्दोष नहीं है
यह तेरा ही दोष नहीं है
किसके मन को मोह न पाई
चादी की, मोहक झनकार

डूबा जब नभ में राकेश
पवन चली लेकर सन्देश
कलियों अपनी आख मूद लो
बीती रितु आया पतझार

मुझको छोड़ गये तुम, छल के
मीन से छीन लिये कण जल के
जीवन तुम बिन कट न सकेगा
हर पल दूभर, सांसें भार

मधु के प्याले, टूट न जायें
रंग निराले, छूट न जायें
महाप्रलय तक रहे प्रिये, ये
तेरा रूप, तेरा शृंगार

प्राची में छाई, अरुनाई
दिन मुरझाया, संध्या आई
मन कपाट को खोल देख ले
कौन खड़ा है, तेरे द्वार

•

संयोग

तुम किधर रूठ कर जाओगे
जब मन में तुम्हें बसा लूगा
नयनों में अंकित कर लूगा
साँसों में तुम्हे रचा लूंगा

तुम ही तो उठोगे पूरब में
लहराये हुए, आचल की तरह
तुम ही तो मिलोगे, पश्चिम में
मुरझाये हुए घायल की तरह
निज व्यथा को अपनी विस्मृत कर
मैं उर मे तुम्हें छुपा लूगा

तुम ही रजनी मे आओगे
बिखराये हुए काजल की तरह
तुम ही तो गगन पर छाओगे
मडराये हुए बादल की तरह
रिमझिम करके तुम बरसोगे
आगन मे तुम्हे बुला लूगा

तुम ही चपला मे चमकोगे
बल खाई हुई, पायल की तरह
तुम ही तो मेघ में खनकोगे
घबराये हुए, पागल की तरह
तुम बन के दामिनी गिर जाना
सीने से तुम्हे लगा लूगा

•

भाग्य

क्या अब भी कोई दुख है जो
रह गया है शेष उठाने को
फिर भी प्राणों के पन्छी को
क्या बाधा है, उड़ जाने को,

तुमने ही बन्दी बना लिया
है, मेरी उस उत्कंठा को
निकली थी जो पागल होकर
मन से, तुमको अपनाने को

तूने निष्ठुरता की, द्रोही
तो तेरा कोई दोष नहीं
जब स्वयं कामनायें मेरी
आतुर थीं धोका खाने को

वो दिन भी था जब तुम से, मेरे
स्वप्नों का निर्माण हुआ
वो ही भूली बिसरी यादें
रह गईं मेरे बहलाने को ।

कितने प्रयत्न, कितने प्रयास
करके मेरा मन तरस गया
बस एक बार बस एक बार
तुमसे अपना कहलाने को'

•

उत्तर

मेरे प्रश्नों का तुम्हारे पास क्यूं उत्तर नहीं है
स्नेह की एक बूंद तो होगी अगर निर्झर नहीं है

जब किसी ने मेरी अभिलाषा को अपनाना न चाहा
दर बदर भटकेगी यूं ही जिसका कोई घर नहीं है.

क्या अपेक्षा हो तेरी मुझको कि अब आओ न आओ
तुझमें, तेरी यातनाओं में, विशेष अन्तर नहीं है

हो चुका घायल, तो तुम भी फेर कर मुख जा रहे हो
बेधने को फिर मेरा मन, क्या कोई अब शर नहीं है.

जो है मेरे भाग्य में, वह वेदना मैं झेल लूंगा
अब दुखों का भय नहीं, मुझको किसी का डर नहीं है

मैं तुम्हें यदि भूलना चाहूं भी तो सम्भव नहीं अब
किन्तु तेरे पास स्मृति का कोई अवसर नहीं है.

•

आंखें

कहा मिले मेरी आखों की सहचरी आखें
नयन वो जिनकी याद में सदा झरी आखे

वो भीगी रितु वो चादनी नहाई रातों में
जैसे मदिरा सी उड़ेलें वो मद भरी आंखें

सभी से आंख बचाये हुए तेरा मिलना
किसी सताए हिरन सी डरी डरी आंखे

वो जिसमें डूब गया मन तो हो गया पावन
गगा यमुना की तरह श्याम रुपहरी आखे

एक उनके बिना जीवन था हलाहल मुझको
ऐसा अमृत पिला गई सुधाकरी आंखे

कैसे भूलूगा उन्हें मै, विदा की वेला में
तुम्हारी दृष्टि बचाती, भरी भरी आंखें

•

पनघट

वह बैठी वधू पनघट पर आज अकेली रे…
यह एक पहेली बूझ न सकी सहेली रे…

रह कर नयन झुकाये शरमा जाती है
उस छलिया, परदेसी की सुधि आती है
बेला फूले मन में खिल जाये चमेली रे…

चल मे तरंगें उठती, उनका प्यार लिये
ोन चूड़िया विहँस उठी झनकार लिये
मुस्काती है मेहदी से रंगी हथेली रे…

यनों की कलियों पर झुकती मधुकर पलके
ागिन सी लहराती वेले से गुधी अलके
करती है जिनसे पुरवाई अठखेली रे…

•

आँचल

कैसे भूल सकूगा तुमको
कैसे तोड़ू मन की डोर
जब जब याद तुम्हारी आई
भीग उठी नयनों की कोर।

तूने अपनी राह बदल दी
मैं भी मनको देकर धीर
रीते हाथों लौट चला जब
छूट चला अंचल का छोर

तेरे सुख में ही जाने क्यू
मुझको भी सुख है निष्ठुर
स्वयं लुटा दी है मानस निधि
तुझको कैसे कह दू चोर

मन पन्छी पिंजरे का बन्दी
है, जब आया है मधुमास
डालों पर कोयल कूकेगी
उपवन में नाचेंगे मोर

चारों ओर अंधेरी रातें
दुख का नभ, ये मन का दीप
जाने कब किरनें फूटेंगी
जाने कब विहंसेगी भोर

ऐसे ही आभास लगे थे
और भी मुझ पर बन आई
मादक नयन उठाकर उसने
देख लिया जब मेरी ओर'

•

दर्शन

अभी नही टूटी है आशा
युग युग से है प्यास नयन मे
देख रहा हूं औ अनदेखे
तेरी छाया मन दरपन में

आज तेरे जाने के बाद
ऐसे आई तेरी याद
रात गये महकी हो जैसे
जूही की कलिया आंगन में

ओ मेरे मन के विश्वास
तुम जीवन का हो मधुमास
तुममे सुरभित सुमन का उत्तर
क्या होगा नन्दन कानन में

मुझे छलेगा क्या संसार
तुमको देखूंगा साकार
तेरी छवि छाई कण कण में
बिम्ब तुम्हारा नील गगन में

दिवस है तेरी उठती पलकें
निशा तुम्हारी श्यामल अलकें
ऊषा जैसे मुस्काती है
तेरे रक्तिम युगल चरन में

तेरा यश चन्दा बन चमके
तेरा तेज अरुन बन दमके
गीत तुम्हारे मुखरित होते
निर्मल निर्झर के छन छन में

रूप तेरा लहरों सा चंचल
जैसे पुण्य प्राप्ति का अंचल
व्याप्त रहो तुम उर अन्तर में
जैसे वास मलय चन्दन में

तेरे स्वप्न तुझी से बांके
जैसे इन्दु व्योम पर झांके
इन्द्रवधू सी रूपसि जैसे
रखती हो पग रंग भवन में

मन बीना के तार छेड़ दो
मुरली की गुंजार छेड़ दो
वह अनुराग भरे स्वर मानो
उठें हृदय के स्पन्दन में

मेरे मन मानस के मोती
तुझ से मन्द हैं हीरक ज्योती
मृदुल सुरभि का भेद छुपा है
नव पुष्पों के अवगुण्ठन में

मन सम्बन्ध सिन्धु से गहरे
एक हृदय पर सौ सौ पहरे
कौन उसे समझाये जिसको
मुक्ति में दुख, सुख बन्धन मे

छूट गई कर से पतवारें
नइया अब क्या लगे किनारें
ढूंढ रहा हूं लक्ष्य क्षितिज पर
डूब गया है मन उलझन में

तुमने कब अपनाया मुझको
लेकिन निष्ठुर मैं तो तुझको
भूल न पाया सुख मे दुख में
घोर तिमिर में, स्वर्ण किरन में

निद्रा रूठी नेह रोग में
पीड़ा बढ़ती जब वियोग मे
झर झर गिरते रहते आसू
जैसे घन बरसे सावन में

यू ही बीत गई है राते
कह न सका मै जी की बाते
मेरे उलहने खो जाते है
एक तुम्हारे भोलेपन मे

कोई मुझको परख रहा था
पर मैं उसको निरख रहा था
जब ये सारा जग खोया था
धन मे, रजत कनक कुन्दन में

रजनी होगी दिवस ढलेंगे
दीपक पर फिर शलभ जलेगे
मेरा भी निश्चय, निश्चय है
क्या रखा है परिवर्तन मे

अनुपम भावों वाली भक्ति
मेरी श्रद्धा की अनुरक्ति
मन शतदल मे अर्चन कर लू
अश्रु चढ़ा दूगा वन्दन में

जब तक जीवित है ये आस
टूट नही पायेगी सांस
कितनी और प्रतीक्षा होगी
देव तुम्हारे, प्रिय दर्शन में

•

व्यापार

तुमको रख लूगा अन्तर मे
पीड़ा कम हो जाने दो
जीवन की गति को मत रोको
गीत अधूरा गाने दो

मन मे तेरी स्मृति करके
छलकाये है घट भर भर के
अभी तो आग्रे नही धरी है
रोने और रुलाने दो

वीती घड़ियां वीर्त
वो दिन हाय, और व
तुम जो नहीं हो तो अव
यादों को दुहराने

कौन कौन से दुख सहता
कैसे तेरे विन रहता
क्या क्या कहूं उलहने तुमर
छोड़ो भी अव जाने दो

मुझ पे मोहिनी डाल गये वो
मन की मदिरा ढाल गये वो
रीता है मन सदा सदा से
पल भर तो बहलाने दो

उसने तो कर लिया किनारा
वह ही जीत गया मैं हारा
मैं क्या भूलूंगा उसको वो, भूले
उसे भुलाने दो ।

●

अभिमानी

एक बूंद नयनों में ढरका
किन्तु बन गया एक कहानी
नवने पढ़ली विरह कथा, बस
तुझे छोड़कर, ओ अभिमानी।

आये थे तुम सब रंग लेकर
गये किन्तु मुझको बस देकर
एक अपरिचित मोह वेदना
एक मधुर पीडा अनजानी

याद तुम्हारी चपला ऐसी
घन के मध्य चंचला जैसी
चीर गई है मेरे उर को
बरसा गई आंख से पानी

मुझे अकेला छोड़ गये तुम
दूर कहीं, मुह मोड़ गये तुम
क्यूं दुर्लभ है, एक दृष्टि भी
तेरी, एक दृष्टि के दानी

मुरली
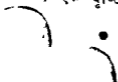
खोज लिया सम्पूर्ण सृष्टि को
कहीं न पाया तेरा छोर
बिखरे हो कण कण में फिर भी
कहां छुपे हो मन के चोर

हर एक सांस में रमने वाले
कब तक नींद रहोगे लूटे
अगनित सूर्य चन्द्र के स्वामी
कब तक और रहोगे रूठे
कब बीतेगी रात अंधेरी
जाने कब आयेगी भोर
कहां छुपे हो मन के चोर

युग युग की ये तप्त पिपासा
पल पल बढ़ती ये आकुलता
ये अनबुझी वियोग की लपटें
विरह वेदना की व्याकुलता
गंगा यमुना सी रहती है
भरी सदा आंखों की कोर
कहां छुपे हो मन के चोर

अन्तर का मधुवन सूना है
सूना है मन का वृन्दावन
कब तेरे अधरों से होगा
प्राणों की मुरली का चुम्बन
उर के मध्य बसे हो मोहन
फिर भी इतने अधिक कठोर
कहां छुपे हो मन के चोर

इस अगाध नीरधि में हे हरि
नय्या डूब रही मझधार
मेरे हठ की लाज रखोगे
कहो, गहोगे कब पतवार
ओ सब जग को लखने वाले
कभी तो लखना मेरी ओर
कहां छुपे हो मन के चोर

●

स्वदेश

मेरे भारत प्यारे देश
नयन नयन के तारे देश

तुझ पर मेरे प्रान निछावर
तुझ पर नहीं किसे अभिमान
तन मन धन अपना देकर भी
हम रखेंगे तेरा मान

अमिट रहेगा नाम तुम्हारा
मेरे राज दुलारे देश

तेरे आंचल में है अपना
वैभव पूर्ण भव्य इतिहास
तेरे आंगन में खेले है
सभी धर्म सारे विश्वास

विश्व शान्ति के प्रमुख प्रणेता
सब देशों से न्यारे देश

पर्वत सिन्धु क्षेत्र वन उपवन
मुखरित है निर्झर के गीत
गंगा यमुना बहती जहा
नर्मदा गोदावरी पुनीत

तू आगार है सब सम्पत्ति का
अद्वितीय हमारे देश

•

मशाल

बढ़ते चलो जवानों पथ पर
लेकर दीप्ति मशालों को

और बिखरने दो धरती पर
परम पुनीत उजालों को

मानवता पर जो आघात
करे, उसका संहार करो

हम किस देश की सन्तान है
दिखला दो दुनिया वालों को

आह्वान

आज किया भारत जननी ने पुत्रों का आह्वान
धर्म है माता का सम्मान
शत्रु विजय करने को धरती मचा रही अभियान
धर्म है माता का सम्मान

तुम्हें सुरक्षित रखना है यदि उपवन के फूलों को
हंसकर गले लगा लो अपनी राहों के शूलों को
सबकी रक्षा के हित कर डाला शिव ने विषपान
धर्म है माता का सम्मान

आज चुका देंगे ऋण अपना धरनी को धन देकर
रक्त दान कर सेनानी को, सेना को तन देकर
आज शक्ति के बने सहायक ज्ञान और विज्ञान
धर्म है माता का सम्मान

असुरजयी, इस वर्बरता से कभी नहीं डरते हैं
युग युग में हम पाप वृत्तियों का विनाश करते है
सदा अभय रहने का हमने पाया है वरदान
धर्म है माता का सम्मान

जिन पर अत्याचार हुये है, उनका दुख हर लेंगे
जो स्वतंत्रता के दुश्मन है उन्हें दण्ड भी देंगे
लोकतंत्र जनतंत्र बना दे, विधि का नया विधान
धर्म है माता का सम्मान

हमे पूर्व पुरुषों ने शिक्षाप्रद उपदेश दिये है
हमने सदा शान्ति के सबको शुभ सन्देश दिये है
सदा रहेगा हमको इस परिपाटी पर अभिमान
धर्म है माता का सम्मान

चलो सिखा दें सकल विश्व को मानव बनकर जीना
होता है पाषाण सरीखा बिना हृदय का सीना
मानवता की गोद में खेला करता है भगवान
धर्म है माता का सम्मान

•

वाण

शान्ति से नहीं शत्रु से त्राण
चलो हे वीर उठाओ वाण

पुण्य है दुष्टों का संहार
समर है आज स्वर्ग का द्वार
युद्ध में ही है अब कल्याण···

अमर है वीरों का बलिदान
सदा होता उनका सम्मान
करें जो रण में महाप्रयाण···

आज सारा भारत है एक
संगठित सबल एवं सविवेक
अतुल है आज शक्ति परिमाण···

सत्य के प्रति कुछ कर लो कर्म
यही उपदेश सिखाता धर्म
माग लो मां से पुनः कृपाण…

रचे कितने ही कपट उपाय
पराजित होता है अन्याय
यही देता इतिहास प्रमाण…

•

ललिता

तूने दिया सहर्ष दान
अपने माथे का कुंकुम 'लाल'
जिससे सदा सदा शोभित
होगा भारत माता का भाल

वह थे परम मनस्वी कुशल
उदार एवं धर्मज्ञ महान
पर उनकी कृति से क्या कम
है तेरा गौरवमय वलिदान

इस धरती के कर्मक्षेत्र में
तुमने किया यहां वह त्याग
जन्म जन्म तक पूजित होगा
तेरा अनुपम अमिट सुहाग

तेरी पावन कीर्ति कहानी
है, जैसे गंगा का नीर
जन जन के उर में संचित
है, तेरी ममता तेरी पीर

दयामूर्ति हो हे तपस्विनी
तुम कौशल्या का अवतार
देश राष्ट्र के हित जो सब सुख
देकर ले ले दुःख अपार

कोटि कोटि पुत्रों का मुख
देखो, मां अब मत करना शोक
कर्म धर्म से बना लिये हैं
तुमने लोक और परलोक

वह जो अन्तरवासी है सबके
अब हो न सकेंगे दूर
उनका यश अमरत्व पा चुका
अमर हुआ तेरा सिन्दूर

गीतावादी के हित में
भौतिक वियोग का है क्या मूल्य
हम न कभी खो सकते है
वह पुण्य ज्योति, वह रत्न अमूल्य

•

शास्त्री

इस धरा को स्वर्ग करके
मोक्ष तुमने पा लिया है
व्यक्त हो सकता नही
उपकार जो तुमने किया है

शान्ति शक्ति चरित्र का संगम
है तेरी कीर्ति गौरव
इस चरण मे नत हुए
आकर सभी सम्भव असम्भव

सव को अमृत दान देकर
क्यू सहर्ष गरल पिया है

इस धरती पर आकर तुमने
स्वयं एक इतिहास बनाया
शुभ सन्देश दिये जागृति के
चेतनता का दीप जलाया

तुम क्या उदित हुये दिनकर से
दिव्य प्रगति की किरणें फूटी
मुक्त हुए बन्धन वसुधा के
युगों युगों की कड़िया टूटी

मानवता के दुख को ढो कर
सुखद कर दिया वर्तमान को
त्याग दिये मरकत मणि मोती
क्या दुष्कर होता महान को

निस्संदेह जवाहर जन्मा
भारत जननी के आगन मे
तेरा बिम्ब सदा मुखरित है
सुरभित स्नेहित रक्त सुमन मे

तुमने कठिन तपस्या से जो
प्राप्त किया हे युग के योगी
वही पवित्र शांति की गंगा
चारों ओर प्रवाहित होगी

उन पावन मंत्रों को लेकर
उड़ते श्वेत कपोत गगन में
उन पुनीत आदेशों के प्रति
जन जन नतमस्तक है मन में

सदा झिलमिलायेगी, तुमने
किया प्रज्ज्वलित जिस वाती को
हम सहेज रखेंगे अपनी
इस स्वतंत्रता की थाती को

•

गांधी

सदा की भांति
वैभवपूर्ण अतीत की तरह
सृष्टि के नियमों के अनुसार
जग की रीत की तरह… फिर
जब धरती अकुला उठी
मानवता पर अत्याचारों से
स्वर्ण विहग पंखों पर
आतताइयों के प्रहारों से

तब उसने जन्मा
एक तप: पूत
यातनाओं से त्राण के लिये
एक दीप जला अंधियारों में
'गांधी'
निर्माण के लिये
नये युग का महापुरुष
दिव्य देव दूत सी आभा लेकर
आया और दुखों की हाला को
मुस्करा कर पीकर
चला गया स्वतंत्रता देकर
उसके आह्वानों पर बरबस
सब ने उठा दिया सर अपना
उसके सिद्धान्तों पर सहज ही
जग ने झुका दिया सर अपना
और आज भी
याद करता उसको
हर कोई हर घड़ी हर जगह
और याद किया जायगा वह
सदा सदा सदा सदा

•